ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

'मैं पायल' उपन्यास में किन्नर जीवन की त्रासदी

डॉ.देव्यानी महिड़ा

आधुनिक हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श हो, नारी विमर्श हो या आदिवासी विमर्श हो। उनके साथ-साथ एक नया विमर्श हमारे सामने उभरकर आया है। वह है किन्नर विमर्श।

किन्नरों को अलग जगहों पर, अलग समाजों और भाषाओं में विविध नामों से संबोधित किया जाता है। जैसे- थर्ड जेंडर, हिजड़ा, तृतीय लिंगी, उभयलिंगी, यूनक, खोजवा, छक्का, शिखंडी आदि। इसलिए इन्हें समाज की वैचारिक स्वीकार ने में हिचकिचा रही है। महाभारत और रामायण के साथ-साथ प्राचीन ग्रंथों और पौराणिक कथाओं में इसके प्रमाण मौजूद हैं। इनका कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी उल्लेख मिलता है। किन्नरों का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि समाज के लोग तो इन्हें त्याग देते हैं, लेकिन स्वयं अपने परिवार वालें भी उन्हें त्याग देते हैं। अपनी मूलभूत सुख-सुविधाओं और आवश्यकओं के लिए भी कठिन संघर्ष का सामना करना पड़ता है। ये अपना पालन-पोषण, नाच-गाकर, बधाई माँगकर करते हैं। वर्षों से शुभ अवसरों पर नेग लेने की परम्परा चली आ रही हैं। वह समाज में सबको आशीर्वाद देते हैं, किन्तु इसके बदले उनको कभी कुछ प्राप्त नहीं होता न आशीर्वाद, न दुआएँ। जन्म से ही समाज द्वारा तिरस्कृत किया जाता है। समाज द्वारा उनको अपमानित किये जाने पर भी वह वर्ग सामान्य वर्ग से कहीं अधिक संवेदनशील होता है। इसी वजह से लोग अपनी मुरादें पूरी हो ऐसे आशीर्वाद माँगते है। और यह मान्यता समाज में सदियों से चली आ रही है। किन्नरों की दुआ या आशीर्वाद से धन, संतान, स्वास्थ्य आदि की इच्छाएँ भली-भाँति पूर्ण होती है|फिर भी किन्नरों के प्रति समाज में जो पूर्वाग्रह है वो बना रहता है।

हिन्दी साहित्य में उभयलिंगी समाज पर नीरजा माधव द्वारा लिखा गया 'यमदीप' (२००२) में पहला उपन्यास माना जाता है। महेन्द्र भीष्म का उपन्यास 'किन्नर कथा' एवं 'मैं पायल', प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'तीसरी ताली', 'और सिर्फ तितली', निर्मला भुराडिया का उपन्यास 'गुलाम मंडी', 'अनसूया

Copyright ⓒ 2020 Authors

त्यागी' का उपन्यास 'मैं भी औरत हूँ', 'भगवत अनमोल' का उपन्यास 'जिंदगी 50-50', 'चित्रा मुद्गल' का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स 203', 'नाला सोपारा' आदि इसके उदाहारण हैं

महेन्द्र भीष्म द्वारा रचित उपन्यास 'मैं पायल' (२०१६) में लिखा गया आत्मकथात्मक एवं जीवनी परक लघु उपन्यास है । १२० पृष्ठों के इस उपन्यास में लेखक ने लखनऊ की किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष को आधार बनाकर कथानक का तान-बान बुना है । 'मैं पायल' उपन्यास बहुत वस्तुपरक ढंग से बेहद गहराई से और पूरी पारदर्शिता के साथ किन्नरों के जीवन की दुखमय, त्रासद, पीडादायक और अमानवीय यातनाओं को बेबाक ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करता है । क्योंकि यह जीवनीपरक उपन्यास है, अतेव कल्पना के इंद्रजाल इसके कथ्य में नहीं है, वहाँ तो एक किन्नर का भोगा हुआ कटु यथार्थ ही वर्णित है। रोमांचित कर देनेवाला, कटु यथार्थ ! उपन्यासकार महेन्द्र भीष्म द्वारा पूरी कथा को पायल से सुनकर उपन्यास में इस प्रकार प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार के अनुसार- " मैं पायल का आधार किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष की गाथा है । जिसमें प्रत्येक किन्नर के अतीत के संघर्ष की झलक परिलक्षित होती है । विस्थापन का दंश कष्टकारी होता है, फिर वह चाहे परिवार, समाज या अपनी मिट्टी से किया हो।''१

उपरोक्त बात से यह तात्पर्य है कि पायल को जब अपने घर, परिवार को छोड़ ने पर अपने जीवन में बहोत से संघर्षो का सामना करना पड़ता है । और इन संघर्षों का सामना प्रत्येक किन्नरों को करना पड़ता है ।

यह कथा क्षत्रिय परिवार के बहराजमऊ निवासी रामबहादुर सिंह नामक व्यक्ति की कहानी है । परिवार में पुरुषों के नाम पर श्री शिवदत्त सिंह, रामबहादुर सिंह, राकेश तथा नारी पात्रों में माँ, बहनें-कमलेश, सीता और आशा ।

उपन्यास की शुरुआत में - "अम्मा बताती है, जब मैं पैदा हुई थी, 'रामबहादुर के एक और लड़की हुई ।' की अप्रिय सी आवाज उन्हें कानों में सुनाई दी थी । कारण मुझसे पहले लगातार मेरी तीन बड़ी बहिने थीं, जबकि एक बेटे को जिसे वह अपनी कोख से जन्म दे चुकी थीं जो उन सबमें बड़ा था । मैं

Copyright © 2020 Authors

उनकी पाँचवी संतान एक हिजड़ा बच्चे के रूप में संसार में लेते ही उन्हें तमाम दुःख, कष्ट और संताप देने के लिए आ चुकी थी । सभी को इस बार उनसे बेटे के जन्म देने की पूरी-पूरी उम्मीद थी । उम्मीद तो पहली दीदी के बाद से ही थी । पर जब दूसरी, तीसरी और चौथी बार लगातार कन्या के जन्म लेने से अम्मा और उनकी कोख को गालियाँ मिलने लगी थीं । जैसे कन्या को जन्म देना उनके ही हाथ में हो, सारा दोष उन्हीं पर मढ़ दिया जाता और कोसा जाता रात और दिन ।"२

उपरोक्त सन्दर्भ से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि माँ माँ होती है, फिर चाहे उसकी संतान पुत्र हो या पुत्री उसे बहोत प्यार करती है, उसके प्यार में किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं होता है ।

पायल का जन्म लखनऊ केंट स्थित आर्मी के कमांड हॉस्पिटल में २६ अप्रैल सन् १९८० के दिन १२ बजे हुआ था । इस उपन्यास की प्रमुख पात्र एवं क्षत्रिय परिवार में जन्म लेनेवाली पायल उर्फ़ जुगनी, जुगनू जो हिजड़ा के रूप में जन्मी पाँचवी संतान है । नायिका के दादा श्री शिवदत्त सिंह भारतीय थल सेना से सूबेदार के पद से सेवा निवृत्त होते हैं । हमारे बाबा अविवाहित थे । जो ऊँची काठी के और बड़ी रौबदार मूँछे थी । उनकी पेंशन और गाँव की खेती-बाड़ी से घर का खर्च निकलता था । दाऊ बाबा का स्वर्गवास जब नायिका छः वर्ष की होती है तब हो जाता है । उसी कारण परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है ।

नायिका के पिता रामबहादुर सिंह के पास जमीन होते हुए भी पारिवारिक स्थिति अच्छी न होने कारण पेशे से ट्रक ड्राइवर का कार्य करते हैं । जुगनी जन्म के बाद उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले का गाँव बहुराजमऊ में संयुक्त परिवार में रहने लगी । आए दिन परिवार में बड़े बुजुर्ग के झगड़े होते रहते थे, फिर भी बच्चों के प्रति कभी प्यार कम नहीं होता था । दारू सेवन की बड़े बुजुर्ग लोगों को आदत हो गई थी, दारू सेवन के बाद पिता जी अम्मा को गलियाँ बोलते और मारते-पीटते एवं सताते रहते थे । तब पायल मन ही मन दु;खी होकर कहती है-"मैं सोचती ये कैसे लोग हैं? रात में लड़ाई दिन में दोस्ती । बाल सुलभ अटकलें ही लगती कुछ समझ नहीं पाती कि आखिर माजरा क्या है ?"३ उपरोक्त संदर्भ से

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि रात को झगड़ा करके दिन में माँ पिता जी से कैसे प्यार से बाते कर लेती है । यह बात मेरे बल सहज मन कुछ भी नहीं समझ पा रहा था।

बचपन में पन्द्रह-पन्द्रह दिन जब पिता जी बाहर रहते तो हम बच्चे बड़ा सुकून महसूस करते थे, क्योंकि इन दिनों में बाबा हमारा विशेष ध्यान रखते, मारना-पीटना तो दूर वो कभी डाँटते भी नहीं थे । पायल जब ढाई या तीन साल की रही होंगी तब वह याद करके कहती है कि अपने बाबा जिन्हें दाऊ कहती थी वह गाँव में एक विधवा पंडिताईन जिसे भौजी के नाम से सब जानते थे वहाँ उनके बाबा का आना जाना रहता था । मुझे दाऊ बाबा गोद में लेकर पंडिताईन भौजी के यहाँ ले जाते और मिठाई पकड़ा देते । मैं तोता और खरगोश के साथ खाते-खाते खेला करती । बाबा आँगन में जब नहीं दिखाय दिए तो रुवाँसी होकर दालान में देखा- "वे पलंग पर उल्टे लेटे पंडिताईन भौजी के स्तन पान कर रहे थे । मैं सोचने लगी दाऊ बाबा बहुत भूखे प्यासे हैं, जो ऐसा कर रहे हैं । दूध तो बैठकर, गोदी में या बगल में लेटकर पीना चाहिए जैसे अम्मा मुझे पिलाती हैं । यह इस तरह क्यों दूध पी रहे हैं, मैं सोचने लगी ।"४ उसके बाद जब दाऊ बाबा मुझे घर ले जा रहे थे, तब मैंने पूछा कि 'दाऊ बाबा तुम्हारा पेट भर गया?' लेकिन शायद बाबा यह बात समझ नहीं पाए ।

दाऊ बाबा से जुड़ा एक और संस्मरण है । यह बात शायद जुगनी जब चार साल की थी तब कि बात है और हिजड़ा रूप होने के साथ भी जुड़ी हुई है । "एक दिन की बात है मेरी दो बड़ी बहिनें दाऊ बाबा के बंद कमरे की ताक झाँक करते दिखीं । मैंने भी कौतूहलवश दरवाजे की झिरियों से देखा कमरे में अंदर दाऊ बाबा अपनी लंगोट खोले पूरे नंग-धडंग अपने शरीर की तेल मालिश कर रहे थे । दो पैरों के बीच से तीसरे पैर को लटकते देख मैं आश्चर्य में पड़ गई । यह क्या है? इसे तो मैंने कभी नहीं देखा । दाऊ बाबा तीसरे पैर को तेल से चुपड़ मुट्ठी में बंद कर मालिश कर रहे थे, धीरे-धीरे तो कभी जोर-जोर से । बहिनों ने मुँह में हाथ रखते हँसते मुस्कुराते मेरे बहुत पूछने पर बताया, "वह दाऊ बाबा का घोड़ा है यह घोड़ा बहुत खतरनाक होता है ....बहुत चोट करता है.......इसी की चोट से माँ रोती हैं क्योंकि पिता जी के पास भी घोड़ा है

Copyright ⓒ 2020 Authors

।"५ जुगनी ने यही बात से अंदाजा लगाया कि अच्छा हुआ मेरे शरीर में नहीं है । उसके बाद बाबा से भी डरने लगी । क्योंकि उसको लगने लगा था कि कहीं मुझे भी चोट न पहुँचा दे ।

उपन्यास के आरंभ में जुगनी के जन्म के बाद पिता रामबहादुर सिंह को पता चल जाता है कि जुगनी (पायल) हिजड़ा या किन्नर है तो वह बहोत दुःखी हो जाते हैं । उनको ज्यादातर समाज का डर सताने लगता है कि समाज के लोग क्या कहेंगे ? सब लोग मुझे हिजड़े का बाप कहकर पुकारेंगे या हिजड़े के बाप के नजरिये से देखेंगे । जुगनी की ऊँचाई लड़के की तरह होने कारण रामबहादुर सिंह उन्हें लड़के के रूप में देखना ज्यादा पसंद करते थे । किन्तु जुगनी को लड़की की तरह रहना अच्छा लगता था । जुगनी लड़की की तरह जीना चाहती थी, क्योंकि उनके शरीर में लड़की की तरह बदलाव आ रहे थे । इसलिए जुगनी लड़की के कपड़े पहन लेती है और जुगनी को लड़की के रूप में रामबहादुर सिंह देख लेते हैं तो वह अपनी पत्नी को कहता है-"कान खोलकर सुन ले कमलेश की अम्मा । अगली बार जब मैं आऊँ और यह साला हिजड़ा लड़की के कपड़े पहने मिला और घर के बाहर निकला, तो मैं अपने ही हाथों से इस साले का खून कर दूँगा ।"६

उपरोक्त संदर्भ से लेखक यह बताना चाहते हैं कि रामबहादुर सिंह को जुगनी लड़की के कपड़े पहने ये अच्छा नहीं लगता है इसलिए वह अपनी पत्नी को कहते हैं कि जब मैं अगली बार आऊँ और यह हिजड़ा लड़की के कपड़ों में मिल गया तो मैं अपने ही हाथों से इस साले हिजड़े का खून कर दूँगा ।

फिर भी जुगनी के पिता ट्रक ड्राइवर होने के नाते महीनों में अधिकांश घर से बाहर रहते हैं । तब जुगनी अपनी माँ को बताकर कभी-कभी लड़की के कपड़े पहन लिया करती थी । लेकिन उनके पिता एक शाम जल्दी घर पर आ गये और जुगनी को लड़की के कपड़ो में देख लिया । यह देखकर जुगनी अपने शरीर की सारी शक्ति समेट अम्मा के पास रसोईघर की और भागने के लिए पलटी पर भाग न सकी मेरी फ्रॉंक का पिछला हिस्सा पिता जी के हाथों में आ चूका था । पिता जी फ्रॉंक से खींचते हुए- "पास रखी बाल्टी में भरे पानी से मुझे नहला दिया फिर वहीं रखी चमड़े की चप्पल को टब में भरे पानी में डुबाडुबाकर मेरे नग्न शरीर की चमड़ी उधेड़ने में लगे रहे जब तक मैं बेहोश नहीं

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

हो गई । पल भर के लिए होश आता देखती अम्मा मेरे ऊपर लेटी पिता जी की चप्पलों से पिट रही थीं, फिर वह मुझे बचाते हुए स्वयं कितनी देर तक पिटती रहीं पता नहीं मैं तो कब की बेसुध हो चुकी थी ।''७ रामबहादुर सिंह ने जुगनी को इतना मारने-पीटने के बाद भी उसका जी नहीं भरा तो जुगनी को गले में रस्सी बाँधकर उनके पैरों के पंजे ईटों के बने चट्टे पर टिक आए थे । लेकिन फिर भी जुगनी किसी तरह बच जाती है । और जुगनी अपने मन को रोती-काँपती हुई कोसती हैं- ``क्षत्रियों के खानदान में हिजड़ा पैदा होने का जैसे सारा श्रेय मेरा ही हो... मैं हिजड़ा हूँ... ठीक हैं, पर इसमें मेरा क्या कसूर ? हिजड़ा होने में मेरी अम्मा बल्कि पिता जी का भी तो कोई दोष नहीं, फिर मेरे साथ ही ऐसा दुर्व्यवहार क्यों ? लोग अपने विकलांग बच्चों को पल लेते हैं, पर एक हिजड़ा बच्चे को नहीं क्योंकि हिजड़ा बच्चा होना वे अपनी आन, बान,शान के खिलाफ समझते हैं । क्षत्रियों में सिंह पैदा होते हैं, हिजड़े नहीं । उफ्फ पता नहीं क्या-क्या विचार मेरे दिल दिमाग में छाए रहे ।''८

उपरोक्त संदर्भ से लेखक यह बताना चाहते हैं कि दुर्भाग्य से जुगनी का जन्म क्षत्रियों के कुल में हो जाने के कारण उनके परिवार के लोगों को अच्छा नहीं लगता हैं, क्योंकि क्षत्रियों के कुल में सिंह पैदा होते हैं, हिजड़े नहीं । इसलिए जुगनी हिजड़ा के रूप में पैदा होने के कारण उनके पिता जी उसके साथ समाज के डर से दुर्व्यवहार करते हैं ।

क्षत्रियों के खानदान में जुगनी का जन्म होने के कारण बचपन में उनके भाई -बहनों को दुनियादारी का ज्ञान न होने के कारण उनका व्यवहार हिजड़ा भाई या बहन के साथ सामान्य रहता हैं,किन्तु जैसे-जैसे दुनियादारी समझ में आती है । वैसे ही वे दोनों भाई -बहन जुगनी से नफ़रत करने लगते हैं । जैसे- राकेश के मित्र राकेश को जुगनी यानी की छक्के के भाई के रूप में देखते थे । कभी-कभी जुगनी का भाई मदिरापान भी करता था । जुगनी की असलियत के बारे में एक दिन किसी दोस्त ने राकेश को पूछा तो वह गुस्से में आ जाता है । राकेश उसके दोस्त को मारता-पीटता हैं, किन्तु बाद में उसे सुनने को मिलता है कि- ``साला, मादर, छक्के का भाई छक्का बड़ा रौंब दिखाता है । सब घुसेड़ दुँगा । सारी दादागिरी धुरी की धुरी रह जाएगी ।''९ इसीलिए जुगनी के भाई-बहनों को

Copyright ⓒ 2020 Authors

जैसे–जैसे दुनियादारी समझ में आती है वह उससे नफरत करने लगते हैं । और साथ ही साथ परिवार से अलग करने के लिए कहतें हैं ।

अपने पिता जी, भाई–बहनों और समाज से प्रताड़ित होकर जुगनी बार–बार मरने और आत्महत्या करने के लिए सोचती है । सबसे पहले वो सोचती है कि – ''कुए में छलांग लगा देगी न रहेगी यह हिजड़ा देह न रहेंगे ताने जो मुझे और मेरे
परिवार को मेरे कारण मिल रहे थे । पिता जी मानसिक कष्टविहीन हो जायेंगे । मेरी वजह से अम्मा और बहिनों को जो संताप और दु:ख उठाने पड़ते हैं उससे वे मुक्त हो जायेंगी । शनै: शनै: यह विचार मेरे अंतर्मन की आवाज बनता चला गया ।''१० कुए में छलांग मारकर मरने के बजाय वह अब ट्रेन से कटकर मरने का सोचती है किन्तु वहाँ पर भी जो असफल रहती है । अंत में रेल्वे स्टेशन आकार वह एक ट्रेन से उन्नाव चली जाती है । अब बहराजमऊ गाँव छुट रहा था तब खुद जुगनी को भी यह पता नहीं था की वह कहाँ जा रही है । और पैर में काँटा चूभ जाने के कारण रेल के डिब्बे में एक प्रौढ़ मोटा,ठिंगना धोती, कुरते वाला व्यक्ति काँटे को निकालने के बहाने हमदर्दी दिखाता हुए जुगनी के अंगों को स्पर्श करते हुए, उनके बारे में जानकारी हासिल करता है । जुगनी अकेली है इस बात का पता उन्हें चल चूका था और कहता है कि – "कहाँ जा रही हो ?....मैं घबड़ा गयी और रोने लगी । वह समझा मेरे बाएँ पैर के तलवे से रिस रहे खून की वजह से मैं रो रही हूँ, मैंने अपने घाव की और देखा । अरे, ला मैं देखूँ, अभी निकल देता हूँ । वह प्रौढ़ मुझसे सटते हुए बोला सामने की बर्थ खाली थीं, साइड की सीटों पर भी कोई नहीं था । मैं खिड़की की और खिसकी गई ।....नाम नहीं बताया तुम अपना ? उसने मेरे बाएँ पैर का पंजा अपनी गोद पर रख लिया था । पूछा ही कब था फिर भी मैंने सहमते हुए बताया, 'जुगनी' ।...बहुत अच्छा नाम है । वह मेरे पैर से ऊपर हाथ सरका रहा था ।....अंकल जी काँटा निकल चुका है । मैंने अपना पैर उसकी गोद से हटाना चाहा ।....तभी तो खून रिस रहा है । काँटा न निकला होता तो खून नहीं रिसता । प्रौढ़ ने मेरी पिंडली दबाते हुए कहा ... मैं सहमी हुए कुछ न बोली पर उसकी गंदी हरकते समझ रही थी । वह मेरी बाप की उम्र का था ।''११ उपरोक्त संदर्भ के बारे मैं लेखक यह बताना चाहता है कि प्रौढ़ अंकल जी को पता

Copyright ⓒ 2020 Authors

चल गया था कि जुगनी अकेली है । इस बात का फायदा उठाकर जुगनी के अंगों के साथ खिलवाड़ करने लगता है ।

उसके बाद जुगनी को एक और नयी मुसीबत का सामना करने की बारी आ जाती है । प्रौढ़ अंकल बीस रूपये का नोट जुगनी की और बढ़ते हुए कहता है – ''ले रख और बाथरूम में आ जाना । इतना कह वह बाथरूम की और इशारा कर चला गया ।''१२ जुगनी ने बीस रूपये का नोट बर्थ से फर्श पर गिर चुकने के बाबजूद उसे छूआ तक नहीं और वह अपनी सीट पर ही जमकर बैठी रही । जब जुगनी वहाँ नहीं गयी तो वह प्रौढ़ अंकल पचास रूपये देने को तैयार हो जाता है और साथ ही साथ उसके जांध पर भी हाथ रख देते हैं । लेखक ने उस वक्त का वर्णन करते हुए लिखा है कि– ''उस प्रौढ़ की और एक पल को लिए देखा । वह जा रहा था उसकी आँखों मैं मुझे दिखा जैसे शेर अपने शिकार को नया झुंझलायी एवं ललचायी नजरों से देखता है । शायद उन्नाव आने को था । ट्रेन की गति धीमी होती जा रही थी ।''१३

जब जुगनी ट्रेन से प्लेटफार्म उतरी तो एक बेंच पर बैठे सो जाती है । तब जुगनी को लगा कि– ''कोई मेरे गालों को सहला रहा है, उभरी छातियों पर हाथ फेर उन्हें टटोलने मैं लगा हो मेरी नींद टूटी मैं जाग गयी और उठकर बैठ गयी । प्लेटफार्म की लाईटें जल रही थीं । शाम ढल चुकी थी । पटरियों की और धुंधलका फैला हुआ था ।''१४ तब जुगनी की इज्जत पे समाज मैं रक्षा कनेवाले कर्मी ही हाथ डाल रहे तो औरों से तो क्या उम्मीद की जाती है । पुलिसवाल सोच रह था की मुझे कोई देख न ले इसलिए चारों और देख रहा था । बाद में जुगनी को जहाँ से रोशनी कम दिखाई देती है वहाँ घसीटकर ले जाता हैं । जुगनी पूरी तरह से डरी हुई थी । ''क्या सोचने लगी उसने मेरी बायी छाती बेरहमी से मसल दी । मैं दर्द से रोने लगी उसने मुझे चिपका लिया ।....वह मुझसे सटकर बैठ गया और इधर–उधर छूते मेरा हाथ अपने घोड़े पर ले गया ।.... दबा इसे दबा...जोर से पकड़ ।... मैं डर गई और उसके घोड़े को दबाने लगी...उसने मेरी छातियाँ सहलानी शुरू कर दी । वह मुझे चिपकाये चूमता जा रहा था और चौकन्ना हो चारों तरफ देख भी रहा था । मैं परेशान उलझन में थी और उसके बश मैं थी, बेबस । एका–एक उसने मेरा हाथ

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

हटा दिया और संभलकर बैठ गया । मैंने देखा वहाँ से कुछ लोग गुजर रहे थे ।''१५ उपरोक्त संदर्भ के माध्यम से लेखक यह बताना चाहता हैं कि आज भी भारत जैसे देश में अनजान लड़कियाँ कितनी सुरक्षित हैं इसका पता इस उपन्यास के माध्यम से प्राप्त होता है । और जब देश की रक्षा करनेवाला पुलिसवाला ही भक्षक बन जाता हैं तो नारियाँ कैसे सुरक्षित रह सकती है ।

जब जुगनी के साथ पुलिसवाला गंदी हरकते करता है तो जुगनी उसका विरोध करती है तो पुलिसवाला डराने लगा है कि – ``हरामखोर सच बता घर से भागकर आयी है न ! सिपाही कड़क और तेज आवाज में बोला ।''१६ तब डर के मारे जुगनी अपनी जगह पर खड़ी होकर 'हाँ हाँ' करने लगती हैं । पुलिसवाला जुगनी के साथ जबरदस्ती करता है, तब उसी समय वहाँ से एक ट्रालीवाला निकलता है, उसे मालूम हो जाता है कि दाल में कुछ काला है । तब वह पुलिसवाले को पुछता है कि सिपाही जी क्या हो रहा है तब वह बताता है कि जो चोरी करते हैं, उनकी थोड़ी पूछताछ कर रहा हूँ और कहता है कानून का ही काम कर रहा हूँ । ट्रोलीवाला कबाब में हड्डी बनता हो ऐसा लगने पर पुलिसवाला उसे डाँटते हुए कहता है – ``अब साले तू यहाँ काहे खड़ा हो गया ? लगाऊँ दो-चार डंडे तुझे भी ? चल भाग यहाँ से...।''१७

तुरंत उसके बाद एक लड़का स्नान कर रहा था उसके कपड़े चुराकर जुगनी ने ट्रेन में जाकर बदल लिया । पुरुष के कपड़ों में पायल सुरक्षित होने के कारण किसी ने उसकी और आँखा उठाकर देखा तक नहीं । जुगनी वहाँ से कानपुर जानेवाली ट्रेन में बैठ गई । उसे बीच में ऐसा लगा की गंगा में कूदकर जान देने का मन हुआ, लेकिन सोचा सारी पीडाओं से मुक्ति पा लूँ । कानपुर आकर जुगनी अपनी मौसी के घर अपनी माँ को बुलाकर कुछ दिन रहती है । उनकी मौसी जितने दिन माँ साथ रही उतने ही दिन जुगनी को रहने देती है । जुगनी की माँ को चिंता थी की मेरी बेटी कहाँ रहेगी, यह सोचकर जुगनी की माँ अपनी दीदी को कहती है कि तुम ऐसा करो की कुछ दिन जुगनी को तेरे घर रहने देना । तब जुगनी की मौसी अपनी बहन को स्पष्ट शब्दों में कह देती है –``तुम्हारे रहने तक जुगनी हमारे पास रह सकती है पर तुम्हें उसे अपने साथ ही लेकर जाना होगा । मैं एक हिजड़ा बच्चे को अपने साथ कतई नहीं रख सकती हूँ ।''१८ इस बात को

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

लेकर जुगनी सोचती है की अम्मा के सिवा मुझे कोई नहीं चाहता । इस दुनिया को अलविदा कर देना ही ठीक है । जुगनी अपने बारे में सोचते हुए कहती – है ईश्वर ऐसा कौन सा पाप मैंने किया, जो तूने मुझे इस जीवन में हिजड़ा रूप दिया ।''१९ इस संदर्भ के माधयम से लेखक यह बताना चाहते हैं की पुरे उपन्यास में जुगनी का जीवन त्रासदीमय रहा है ।

हर जगह पर जुगनी असुरक्षित थी । पर वह प्लेटफार्म के भिखारियों के साथ बिलकुल सुरक्षित थी । जुगनी अपने शब्दों में कहती है – एक बात यहाँ मैं स्पष्ट कर कभी भूखी नहीं सोई । वे भिखारी जरुर थे पर उनके अंदर मानवता थी, दूसरे के लिए दु:ख दर्द था, अपने साथियों के प्रति हमदर्दी थी, अपनत्व था । एक-दूसरे के लिए वे समर्पित थे । वे भिखारी जरुर थे, लेकिन उनके दिल किसी राजा की तरह थे, जितना कुछ जिसके पास जो भी खाने-पीने को होता वे परस्पर बाँटकर खाते और अगले दिन की चिंता से मुक्त गहरी नींद सो जाते ।''२० कभी-कभी काम न मिलने पर वह स्टेशन के आसपास भीख माँगने लगती है । उसमें से अपना गुजरा करती है ।

उसके बाद कानपुर स्टेशन पर अनवर नामक एक लड़के से दोस्ती होती है,लेकिन एक दिन ट्रेन के नीचे आ जाने से उसकी मौत हो जाती है । जुगनी की मुलाकात ऐसे कई लोगों से होती है । फिर पायल अप्सरा टॉकीज में जुगनू के रूप में संतोष सिंह की कैंटीन में काम करती है । वहाँ पर पच्चीस-छब्बीस साल का प्रमोद भी अप्सरा टॉकीज में ही काम करता है, लेकिन उसकी नियत ठीक नहीं थी । वह बुरी नजरों से आती-जाती लडकियाँ और महिलाओं को घुरता है । जुगनू को प्रमोद एक दिन कहता है –``तू साला एकदम लौंडिया लगता...उसने मुझे जोर से भींच लिया और मेरे बाएँ गाल पर जोर से काट लिया ।''२१

इस प्रकार हवस का शिकार नारी हो या हिजड़ा बनते रहते हैं । यहाँ नारी के साथ हर तरह से प्रताड़ना होती रहती है । पायल की जीवन यात्रा सच में एक संघर्ष की यात्रा है । उसके बाद ठेकेदार संतोष सिंह जुगनू के पूनम टॉकीज में गेटकीपर की नौकरी दिलवा देता है । फिर उसकी मित्रता कटियार साहब से हो जाती है । जिससे वह फिल्म चलना सीख जाती है । उम्र बढ़ने के साथ-साथ पूरी तरह से पायल के शरीर में स्त्री के गुण झलकते लगते हैं और काम करने की

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

तलाश वह लड़की के रूप में करने लगती है । इसलिए कानपुर से लखनऊ आकर जुगनी एक मंदिर में पहुँचती है । मंदिर में जागरण होने के कारण वहाँ बैठ जाती है और मंदिर में वह नाच उठती है तो वहाँ भी एक दो दिन में मशहूर हो जाती है। एक दिन किन्नरों के हाथ लग जाती है । जुगनी को जबरदस्ती गोमती नगर की गुरुमाई मोना किन्नर के पास ले आते हैं । बहुत चिल्लाने पर भी पायल की सुननेवाला कोई नहीं था । रिया किन्नर कहती है – ''अरे छोड़ना नहीं, ले चलो गुरुमाई । असली है, असली बुचरा हिजड़ा है देख क्या मस्त दूध हैं । रिया ने मेरा बाया अंग बेरहमी से दबाते कहा ।''२२ पायल कहती है मैं किन्नर हूँ तो क्या हुआ, किन्नर होना अपराध है । वहाँ एक कमरें में जुगनी कैद कर दी गयी । उससे किन्नरोंवाले काम जबरदस्ती करवाने लगते हैं । जैसे– ''क्या एक किन्नर को बधाई टोली के अलावा अन्य कार्य-दायित्व नहीं सौंपे जा सकते । मैं टॉकीज में प्रोजेक्टर चलती हूँ । उसके पहले अन्य छोटे-मोटे कार्य भी मैंने किये हैं फिर मुझे क्यों बाध्य किया जा रहा है की मैं इनकी तरह ताली पीटू, ढोलक बजाऊँ, नाचूँ और बधाई गाऊँ ।''२३

तब्बसुम नामक किन्नर के यार जिसका नाम पप्पू था । वह पायल को शारीरिक, मानसिक अत्याचार गुजारते हुए नंगी कर देता है । तब पायल कहता है कि – ''निर्वस्त्र होने का आभास हुआ मुझे लगा कि मैं मर चुकी हूँ और मेरी आत्मा मेरे शरीर से बाहर आकर मेरी मृत देह देख रही थी ।''२४ पप्पू नामक गुंडे द्वारा किए गए सार्वजनिक अपमान को पायल भूल नहीं पाती है । इस तरह पायल एक दिन अपने अपमान का बदला पप्पू से इस प्रकार लेती है – ''बधाई टोली से कुछ आगे साईकिल पर पप्पू दिख गया । महीनों से मेरे अंदर जो बदले की आग दबी पड़ी थी एकाएक भड़क उठी । मेरे अंदर पप्पू के प्रति घोर नफरत थी । पुरानी घटना एकाएक ताजा हो आई । मैंने आव देखा न ताव टैम्पो से उतरकर पप्पू के पीछे से आकर उसकी गर्दुन पकड़कर जो लात की ठोकर उसकी दोनों जाँघों के बीच जमाई वह पहले ही बार में बिल बिला उठा, फिर उस पर अशोक और में लात-घूसों से बुरी तरह पिल पड़े । किन्नरों की टोली रिक्शों से उत्तर आयी थी । मोना गुरु बीच-बचाव करने दौड़ी चली आयी फिर मेरा रौद्र रूप देख सहम कर पीछे हट गयी ।''२५ इस प्रकार पायल पप्पू की बहुत पिटाई करती है । लखनऊ में पायल की छवि किन्नरों में एक दबंग किन्नर के रूप में बन

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

जाती है । मोना किन्नर पायल की राह में बहुत से रोड़े डालती है, पर उससे जीत नहीं पाती है । सभी से दोस्ती छुट जाती है ।

मोना किन्नर की मृत्यु ज्यादा शराब पीने की वजह से हो जाती है । उसकी गद्दी पर उसका चापलूस ओझा बैठ जाता है, किन्तु उसका किन्नर समुदाय अस्वीकार करता है । पायल अशोक सोनकर के संदेहशील स्वभाव से तंग आकर, उससे भी दूर हो जाती है । जब वह 'हिजड़ा' एवं 'छक्का' शब्द का इस्तेमाल पायल के लिए गाली के रूप में करता है, जब हद हो जाती है । सभी जगह पर अशोक पायल किन्नर है, ऐसी बातें बताते लगता है, जिसके फलस्वरूप किन्नर समुदाय की तरह पायल का मन आकर्षित हुआ । पायल का भी एक डेरा सोनी आदि किन्नरों का साथ होने से बन जाता है । पायल सिंह के नाम से लखनऊ माँ प्रतिष्ठित किन्नर गुरु बन जाती है ।

निष्कर्षत: महेंद्र भीष्म जी ने पायल सिंह के घर से विस्थापित होने से लेकर किन्नर गुरु बनने तक की संघर्षगाथा का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है और लेखक ने उपन्यास के माध्यम से किन्नर समुदाय की त्रासदी, भटकता एवं दिशाशून्य जीवन, किन्नरों के मन की द्विघाभरी स्थिति आदि को व्यक्त किया गया है ।

संदर्भ सूची

१ मैं पायल, महेंद्र भीष्म, प्रस्तावना, पृ .११

२ वही, पृ .१५

३ वही, पृ .१७

४ वही, पृ .१९

५ वही, पृ .२०

६ वही, पृ .३६

७ वही, पृ .३८

८ वही, पृ .३९

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

९ वही, पृ .३६

१० वही, पृ .४१

११ वही, पृ .४४,४५

१२ वही, पृ .४६

१३ वही, पृ .४७

१४ वही, पृ .४८

१५ वही, पृ .४९,५०

१६ वही, पृ .५०

१७ वही, पृ .५१

१८ वही, पृ .८०

१९ वही, पृ .८२

२० वही, पृ .६४

२१ वही, पृ .७३

२२ वही, पृ .९३,९४

२३ वही, पृ .९८

२४ वही, पृ .१०४

२५ वही, पृ .११२,११३

Copyright ⓒ 2020 Authors

प्राध्यापिका
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
एन.एस.पटेल आर्ट्स कॉलेज
आणंद, गुजरात

Copyright ⓒ 2020 Authors